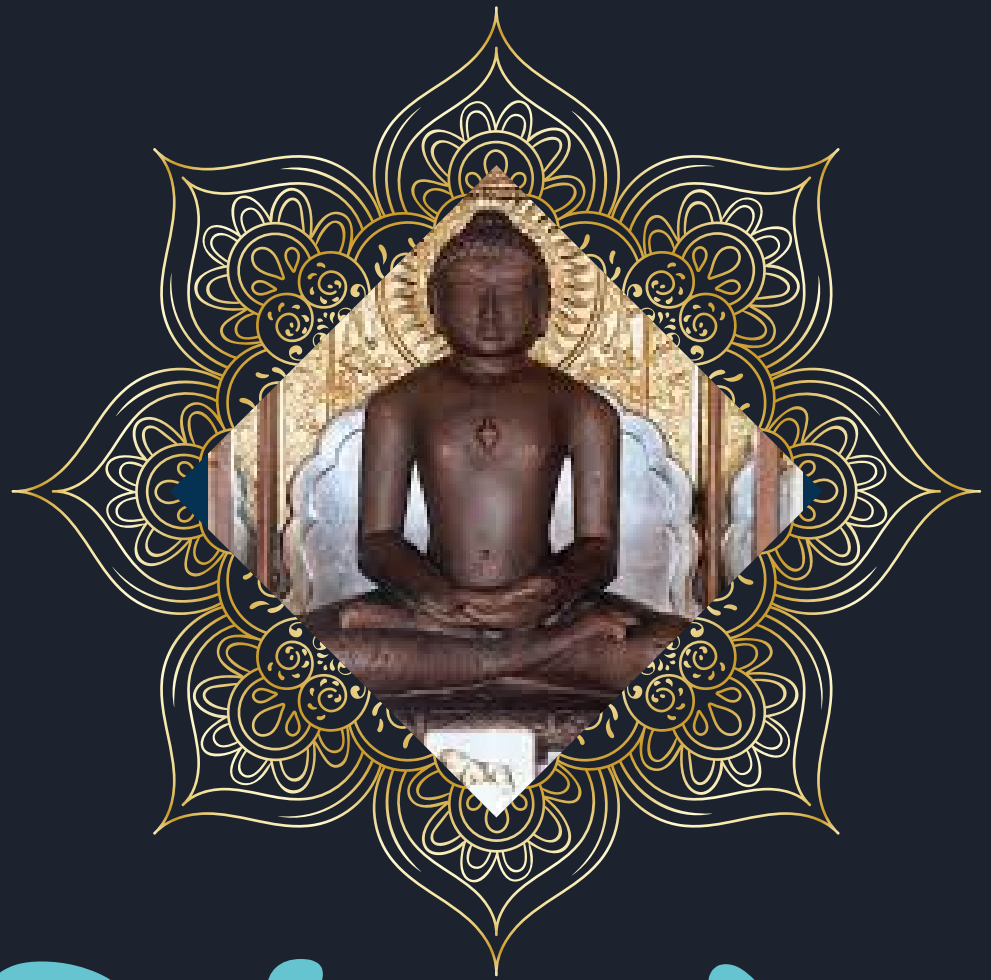
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

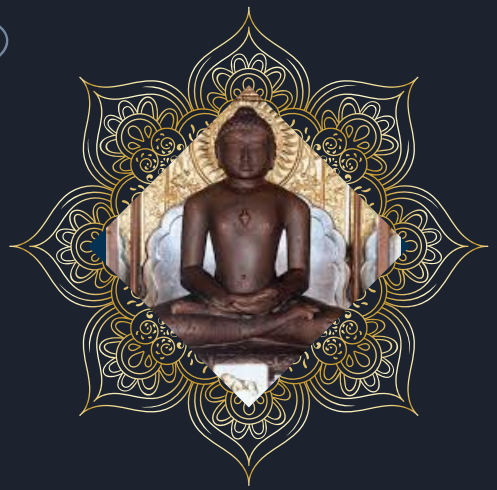


सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

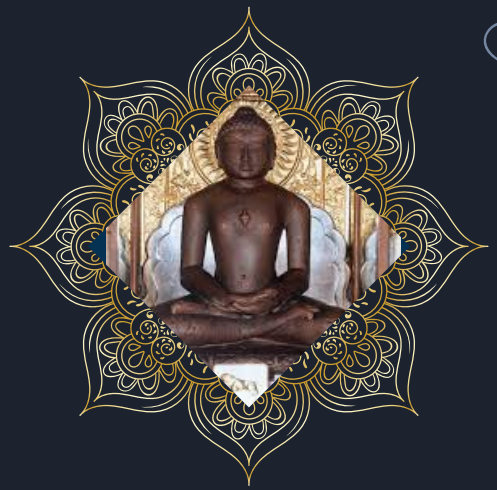
श्री वीरनिर्वाण महोत्सव पूजन

(श्री राजमलजी पवैया कृत)

'दीपमालिका पर्व पूजन'



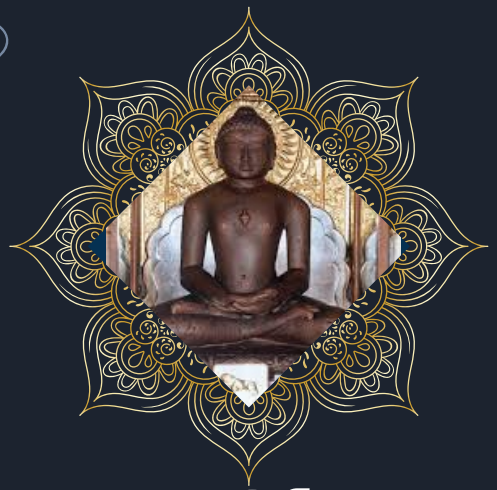
स्थापना

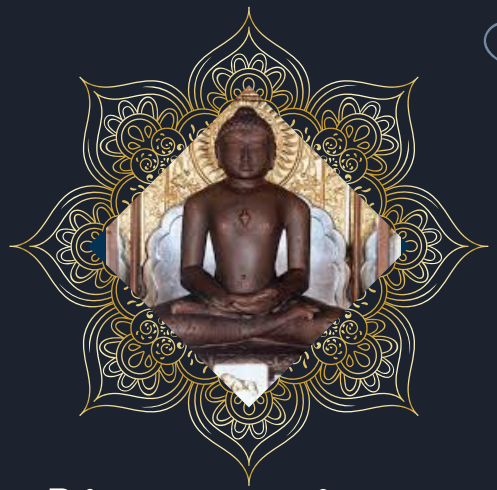


(वीरछन्द)

महावीर निर्वाण दिवस पर, महावीर पूजन कर लूँ ।
वर्द्धमान अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ ॥
पावापुर से मोक्ष गये प्रभु, जिनवर पद अर्चन कर लूँ ।
जगमग जगमग दिव्यज्योति से, धन्य मनुजजीवन कर लूँ ॥

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

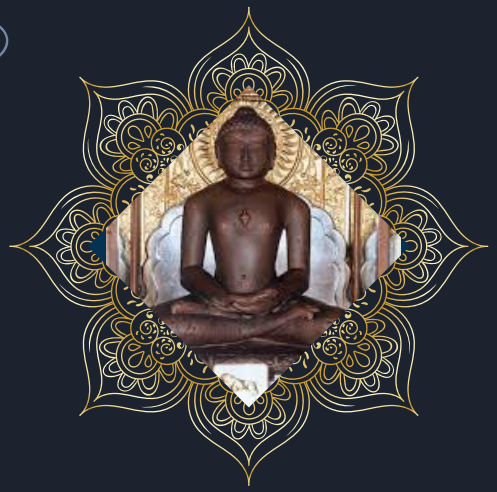


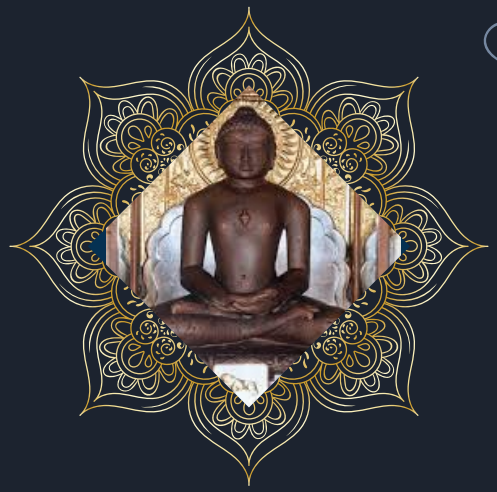


(वीरछन्द)

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को, शुद्धभाव मन में भर लूँ।
दीपमालिका पर्व मनाऊँ, भव-भव के बन्धन हर लूँ॥
ज्ञान-सूर्य का चिर-प्रकाश ले, रत्नत्रय पथ पर बढ़ लूँ।
परभावों का राग तोड़कर, निजस्वभाव में मैं अड़ लूँ॥

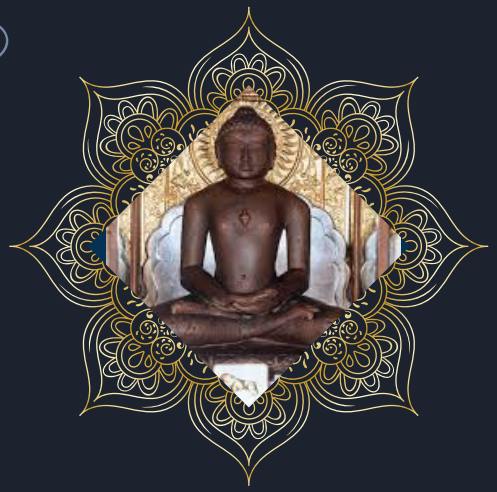
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

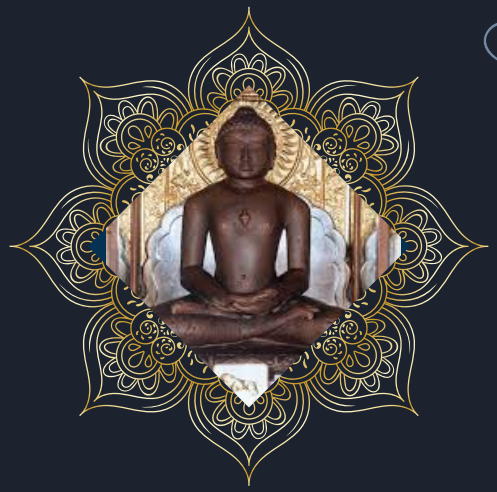




सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलप्राप्त-श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र !
अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलप्राप्त-श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलप्राप्त-श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र !
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

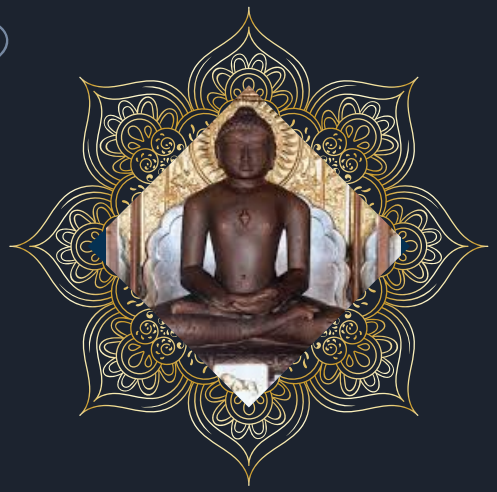




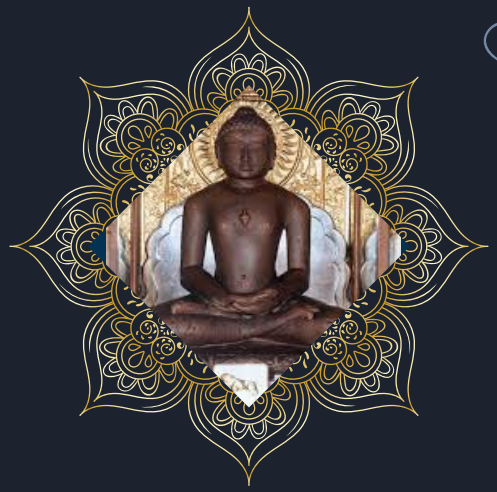
(वीरछन्द)

चिदानन्द चैतन्य अनाकुल, निजस्वभाव मय जल भर लूँ।
जन्म-मरण का चक्र मिटाऊँ, भव-भव की पीड़ा हर लूँ।।
दीपावलि के पुण्य दिवस पर, वर्द्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।



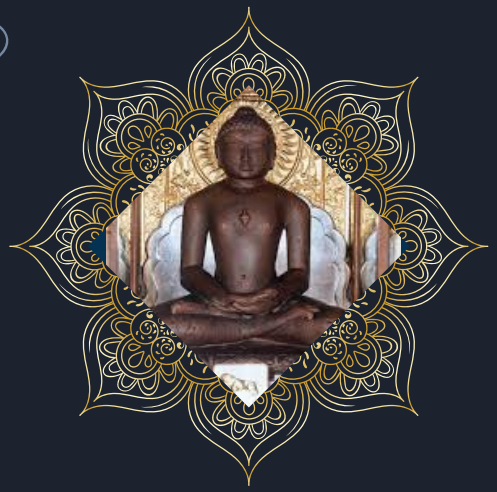
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु



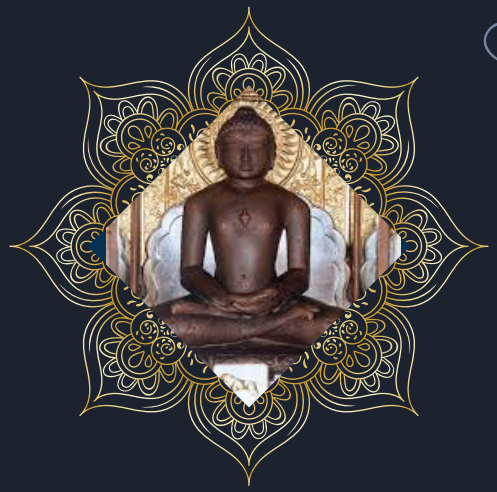
(वीरछन्द)

अमल अखण्ड अतुल अविनाशी, निज चन्दन उर में धर लूँ।
चारों गति का ताप मिटाऊँ, निज पंचमगति आदर लूँ।।
दीपावलि के पुण्य दिवस पर, वर्द्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।



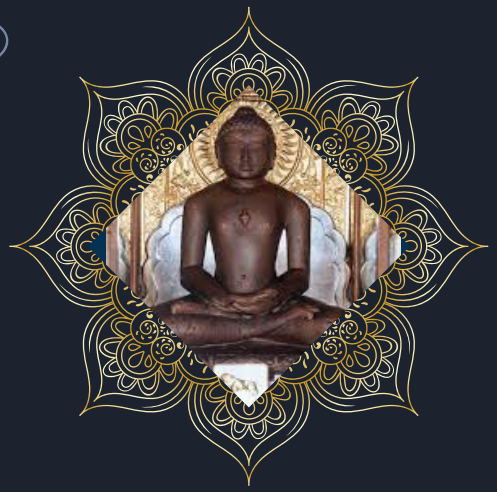
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु



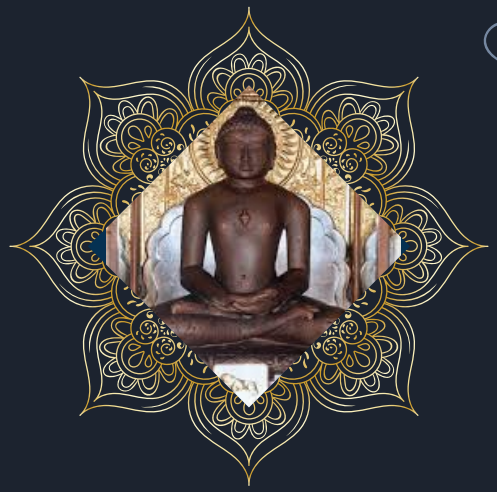
(वीरछन्द)

अजर अमर अक्षय अविकल, अनुपम अक्षतपद उर धर लूँ।
भवसागर तर मुक्ति वधू से, मैं पावन परिणय कर लूँ।।
दीपावलि के पुण्य दिवस पर, वर्द्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।



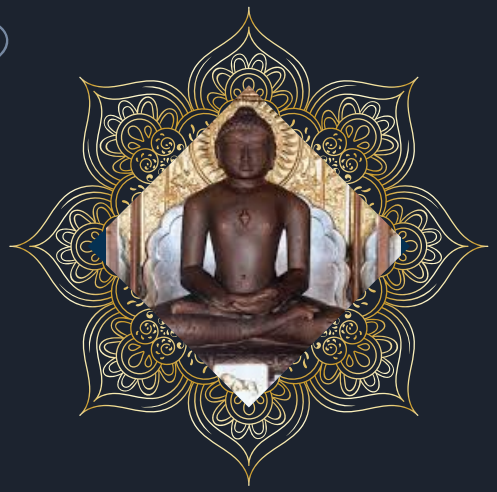
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु



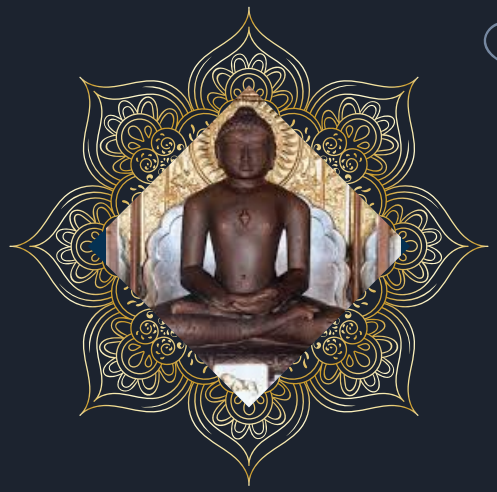
(वीरछन्द)

रूप-गन्ध-रस-स्पर्श रहित निज शुद्ध पुष्प मन में भर लूँ।
काम-बाण की व्यथा नाश कर मैं निष्काम रूप धर लूँ।।
दीपावलि के पुण्य दिवस पर, वर्द्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।



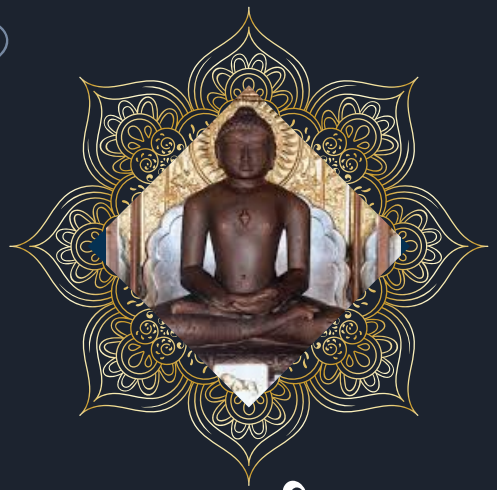
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु



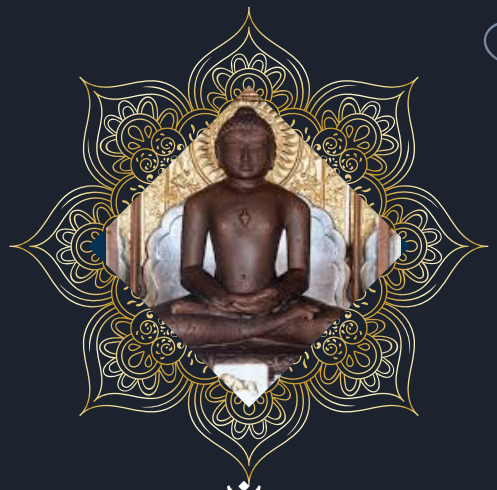
(वीरछन्द)

आत्मशक्ति परिपूर्ण शुद्ध नैवेद्य भाव उर में धर लूँ।
चिर-अतृप्ति का रोग नाशकर, सहज तृप्त निज पद वर लूँ।।
दीपावलि के पुण्य दिवस पर, वर्द्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।



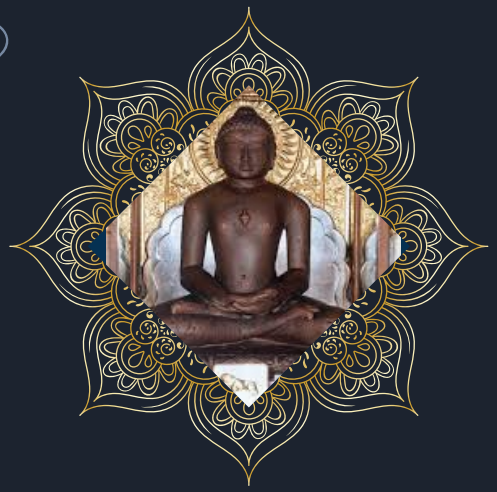
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु



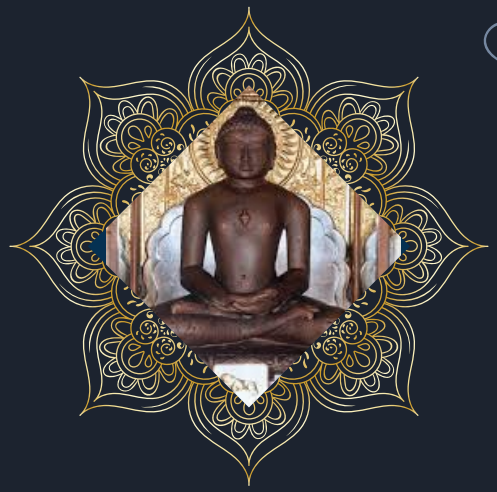
(वीरछन्द)

पूर्ण ज्ञान कैवल्य प्राप्ति हित, ज्ञानदीप ज्योतित कर लूँ।
मिथ्या-भ्र-तम-मोह नाशकर, निज सम्यक्त्व प्राप्त कर लूँ।
दीपावलि के पुण्य दिवस पर, वर्द्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।



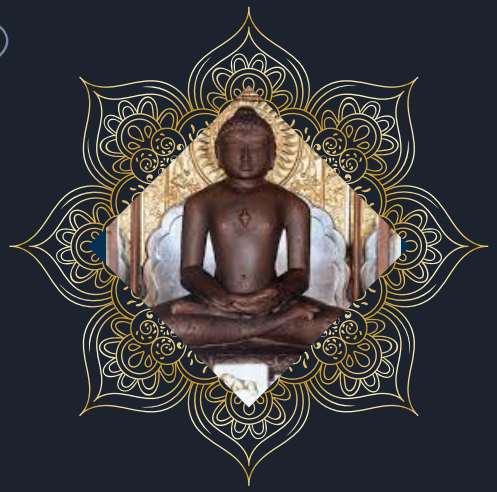
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु



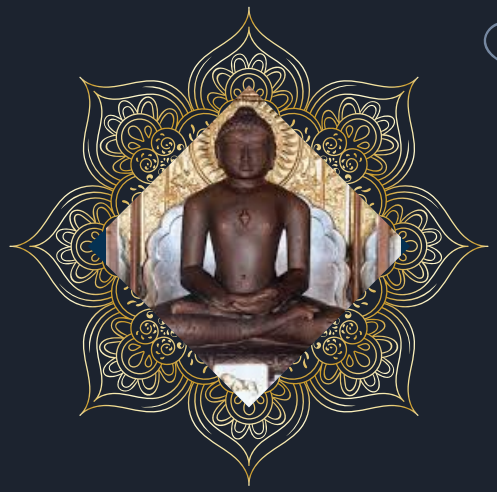
(वीरछन्द)

पुण्यभाव की धूप जलाकर, घाति-अघाति कर्म हर लूँ।
क्रोध-मान-माया-लोभादि, मोह-द्रोह सब क्षय कर लूँ।।
दीपावलि के पुण्य दिवस पर, वर्द्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।



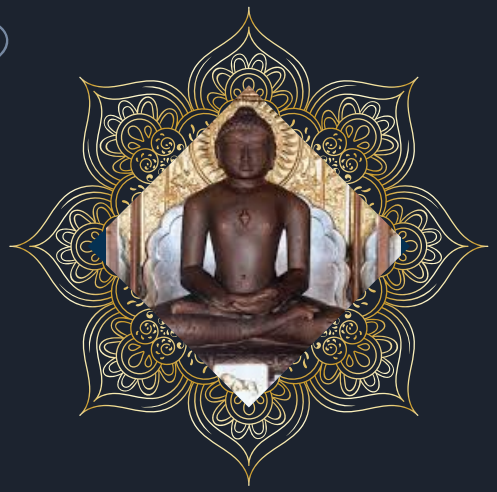
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु



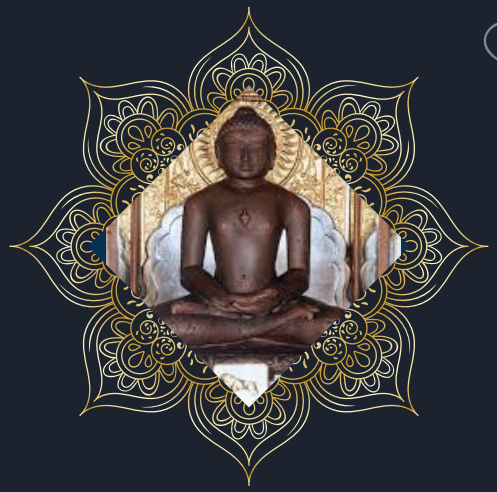
(वीरछन्द)

अमिट अनन्त अचल अविनश्वर, श्रेष्ठ मोक्षपद उर धर लूँ।
अष्ट स्वगुण से युक्त सिद्धगति, पा सिद्धत्व प्राप्त कर लूँ।।
दीपावलि के पुण्य दिवस पर, वर्द्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

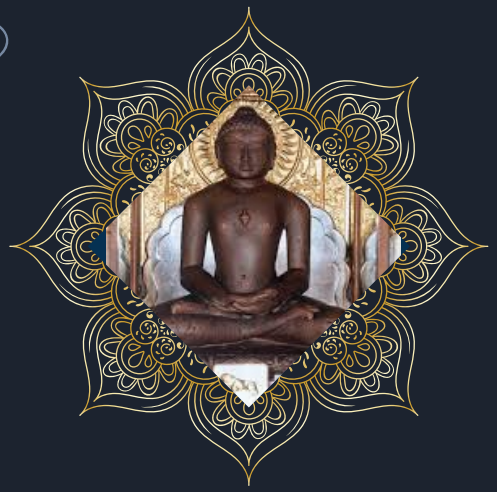


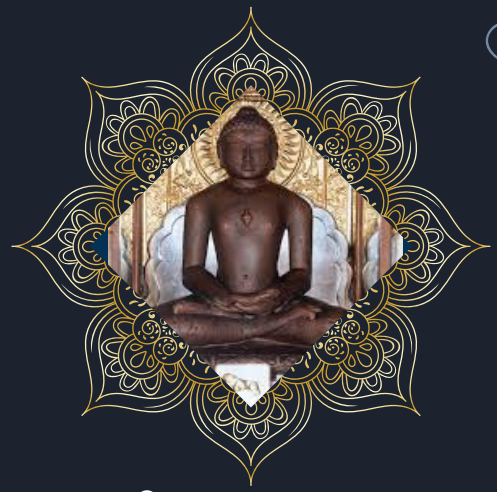
(वीरछन्द)

गुण अनन्त प्रकटाऊँ अपने, निज अनर्घ्य पद को वर लूँ।
शुद्धस्वभावी ज्ञान-प्रभावी, निज सौन्दर्य प्रकट कर लूँ।।
दीपावलि के पुण्य दिवस पर, वर्द्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य





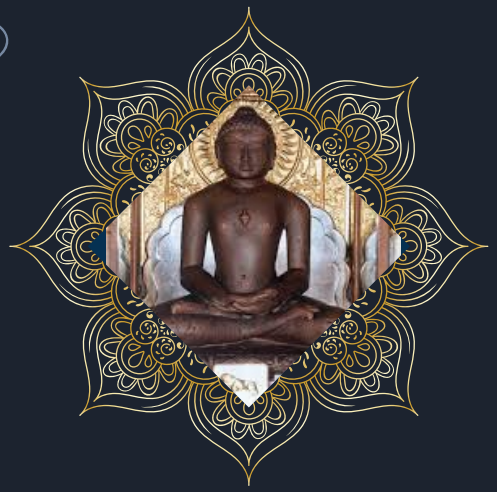
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

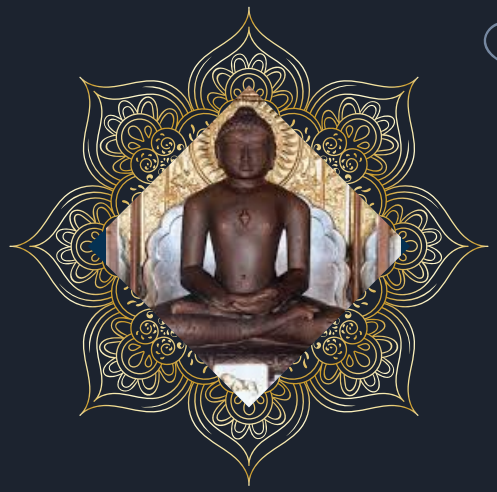
गर्भ कल्याणक अर्घ्य

शुभ आषाढ़ शुक्ल षष्ठी को, पुष्पोत्तर तज प्रभु आये।
माता त्रिशला धन्य हो गई, सोलह सपने दरशाये।।
पन्द्रह मास रत्न बरसे, कुण्डलपुर में आनन्द हुआ।
वर्द्धमान के गर्भोत्सव पर, दूर शोक-दुख-द्वंद्व हुआ।।

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्री वर्द्धानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य



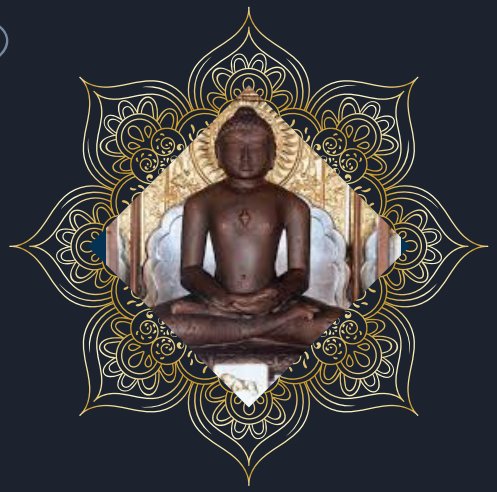


सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जन्म कल्याणक अर्घ्य

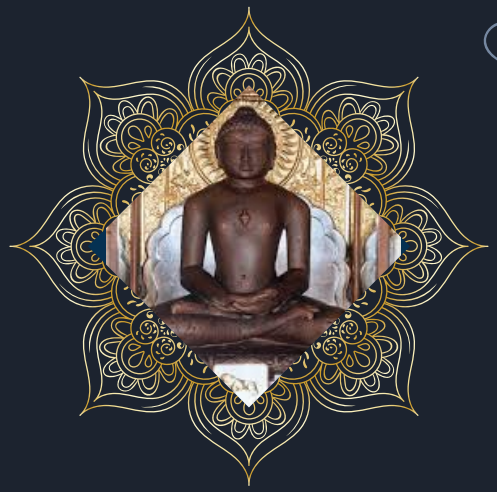
चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी को, सारी जगती धन्य हुई।
नृप सिद्धार्थराज हर्षाये, कुण्डलपुरी अनन्य हुई।।
मेरु सुदर्शन पाण्डुक वन में, सुरपति ने कर प्रभु अभिषेक।
नृत्य वाद्य मंगल गीतों के, द्वारा किया हर्ष अतिरेक।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा



पंचकल्याणक अर्घ्य

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

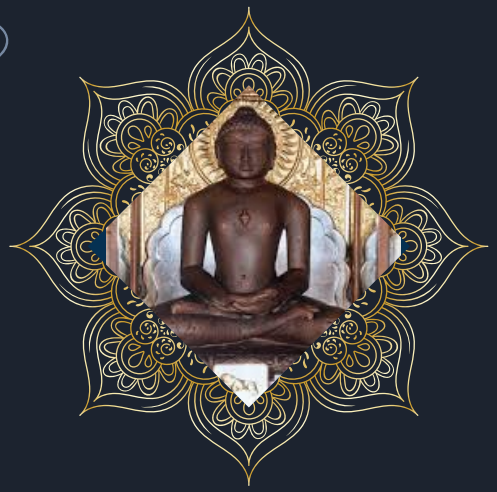


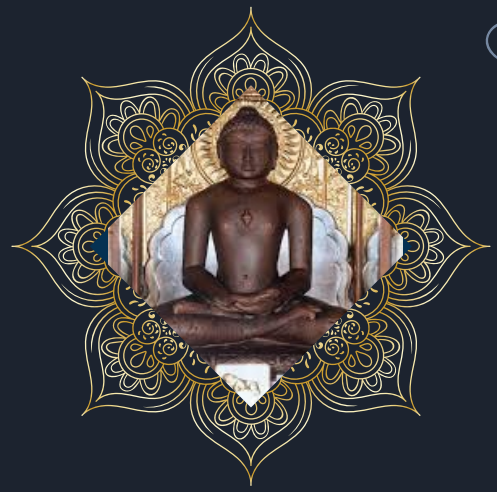
तप कल्याणक अर्घ्य

मगसिर कृष्णा दशमी को, उर में छाया वैराग्य अपार।
लौकान्तिक देवों के द्वारा धन्य-धन्य प्रभु जय-जय कार।।
बाल ब्रह्मचारी गुणधारी, वीर प्रभु ने किया प्रयाण।
वन में जाकर दीक्षा धारी, निज में लीन हुए भगवान।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य





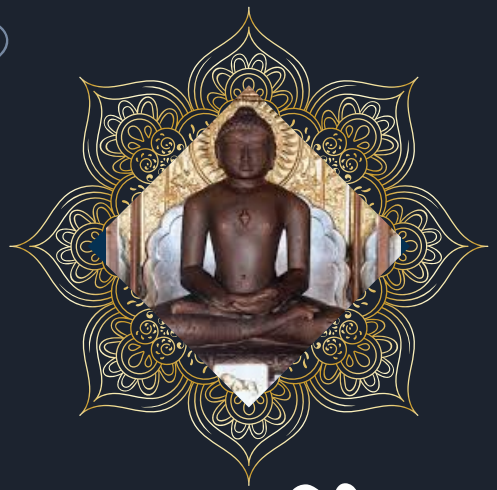
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

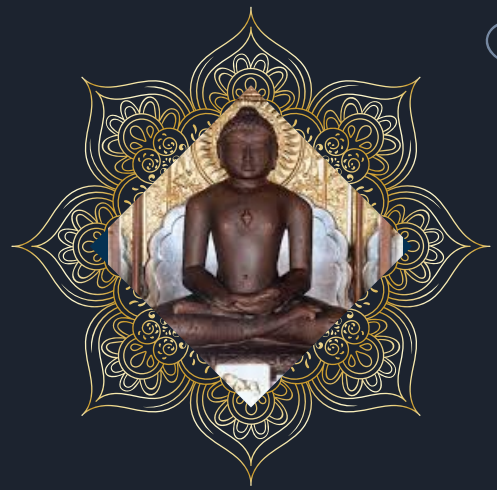
ज्ञान कल्याणक अर्घ्य

द्वादश वर्ष तपस्या करके, पाया तु ने केवलज्ञान।
कर बैसाख शुक्ल दशमी को, त्रेसठ कर्म प्रकृति अवसान।।
सर्व द्रव्य-गुण-पर्यायों को, युगपत् एक समय में जान।
वर्द्धमान सर्वज्ञ हुए प्रभु, वीतराग अरिहन्त महान।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य





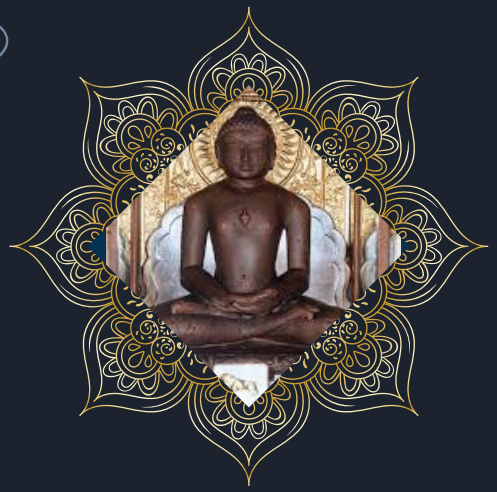
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

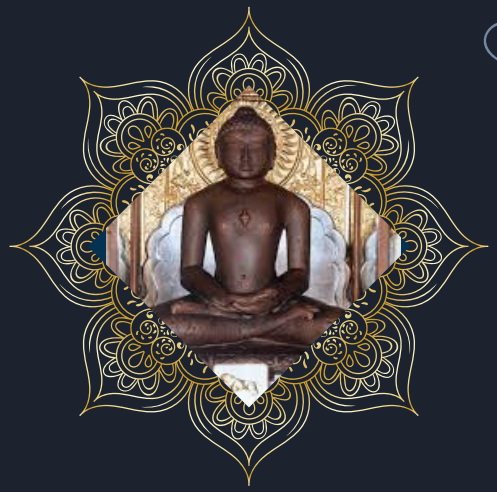
मोक्ष कल्याणक अर्घ्य

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को, वर्धान प्रभु मुक्त हुए।
सादि-अनन्त समाधि प्राप्त कर, मुक्ति-रमा से युक्त हुए।।
अन्तिम शुक्लध्यान के द्वारा, कर अघातिया का अवसान।
शेष प्रकृति पच्यासी को भी, क्षय करके पाया निर्वाण।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला





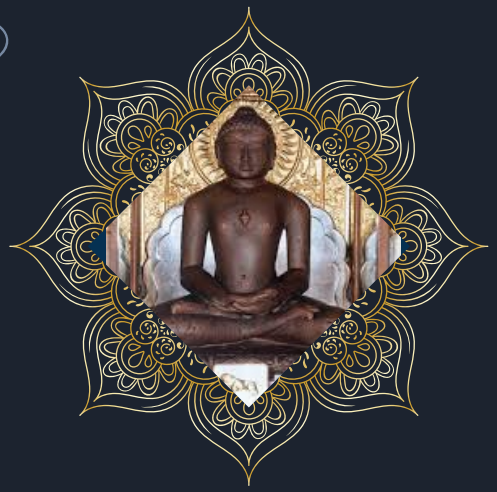
(वीरछन्द)

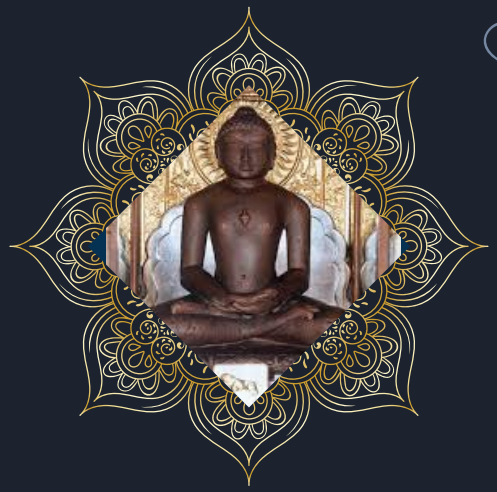
महावीर ने पावापुर से, मोक्षलक्ष्मी पाई थी।
इन्द्र-सुरों ने हर्षित होकर, दीपावली मनाई थी॥
केवलज्ञान प्राप्त होने पर, तीस वर्ष तक किया विहार।
कोटि-कोटि जीवों का प्रभु ने, दे उपदेश किया उपकार॥

1

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला





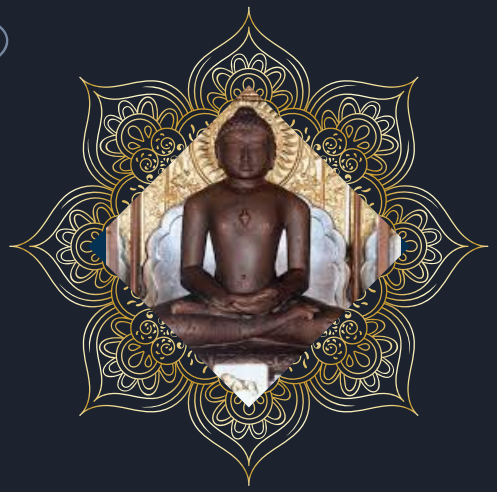
(वीरछन्द)

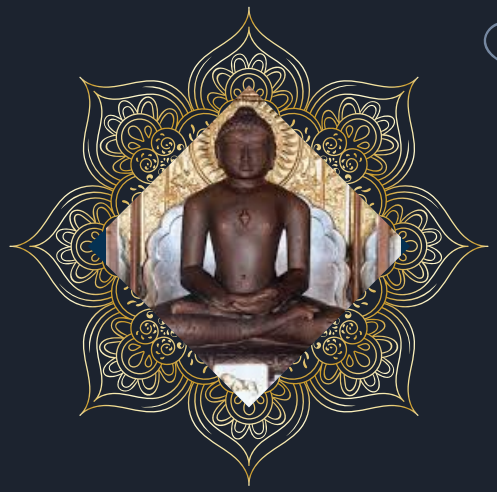
पावापुर उद्यान पधारे, योगनिरोध किया साकार।
गुणस्थान चौदह को तजकर, पहुँचे भवसमुद्र के पार।।
सिद्धशिला पर हुए विराजित, मिली मोक्षलक्ष्मी सुखकार।
जल-थल-नभ में देवों द्वारा गूँज उठी प्रभु की जयकार।।

2

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला





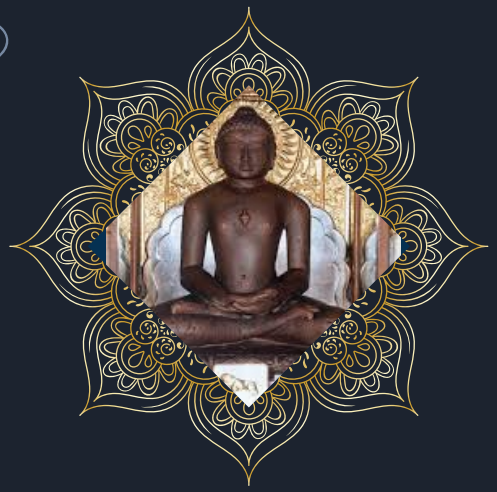
(वीरछन्द)

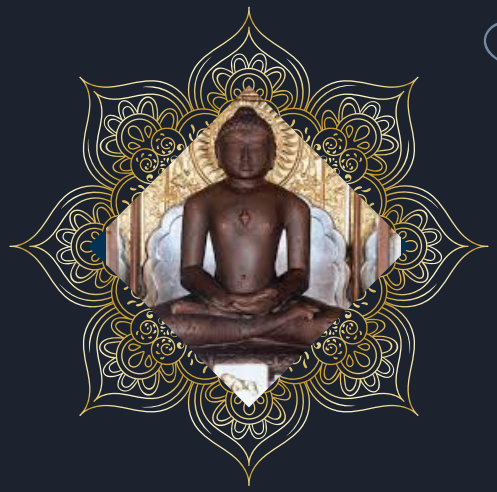
इन्द्रादिक सुर हर्षित आये, मन में धारे मोद अपार।
महामोक्ष कल्याण मनाया, अखिल विश्व को मंगलकार।।
अष्टादश गणराज्यों के, राजाओं ने जयगान किया।
नत-मस्तक होकर जन-जन ने, महावीर गुणगान किया।।

3

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला





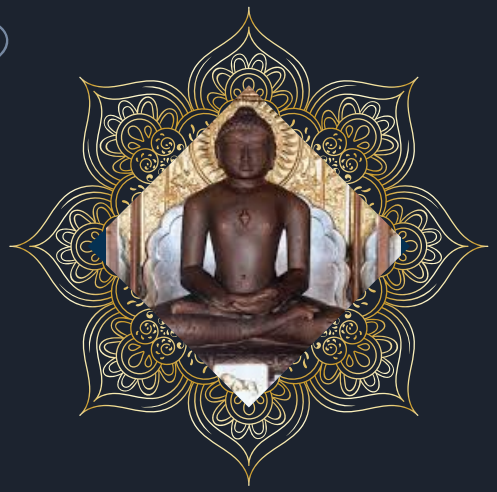
(वीरछन्द)

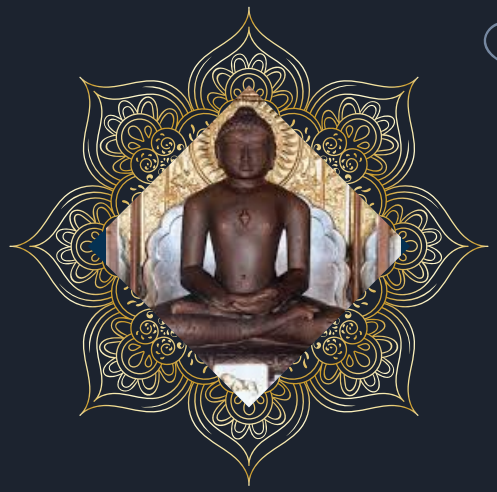
तन कपूरवत् उड़ा शेष नख, केश रहे इस भूतल पर।
मायामयी शरीर रचा, देवों ने क्षण भर के भीतर।।
अग्निकुमार सुरों ने झुक, मुकुटानल से तन भस्म किया।
सर्व उपस्थित जनसमूह, सुरगण ने पुण्य अपार लिया।।

4

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला





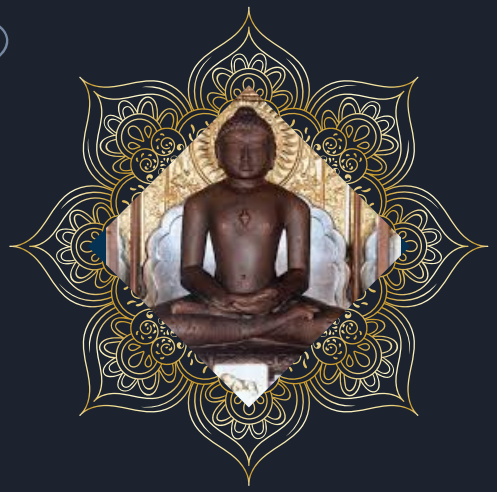
(वीरछन्द)

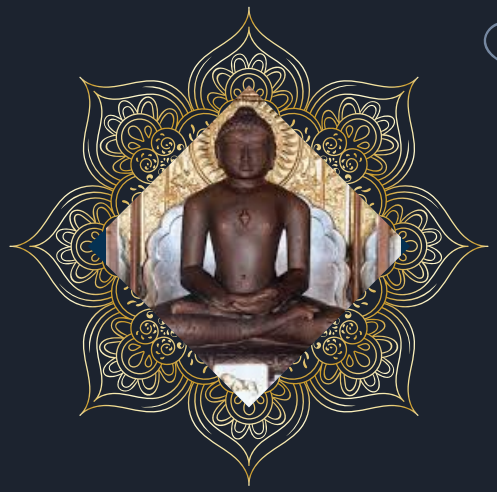
कार्तिक कृष्ण अमावस्या का, दिवस मनोहर सुखकर था।
उषाकाल का उजियारा कुछ, तम-मिश्रित अति मनहर था।।
रत्न-ज्योतियों का प्रकाश कर, देवों ने मंगल गाये।
रत्न-दीप की आवलियों से, पर्व दीपमाला लाये।।

5

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला



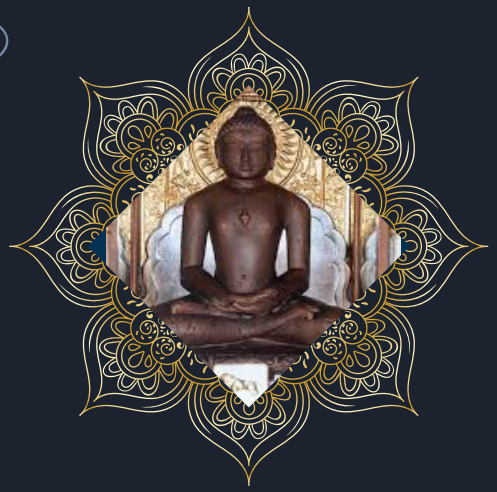


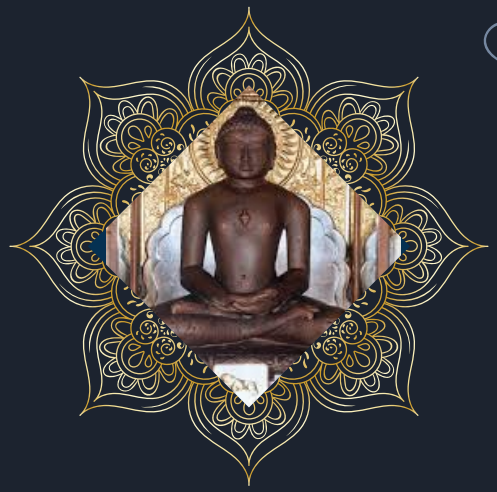
(वीरछन्द)

सब ने शीश चढ़ाई भस्मी, पद्म सरोवर बना वहाँ।
वही भूमि है अनुपम सुन्दर, जल मन्दिर है बना वहाँ।।
प्रभु के ग्यारह गणधर में थे, प्रमुख श्री गौतम स्वामी।
क्षपकश्रेणि चढ़ शुक्लध्यान से हुए देव अन्तर्यामी।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला



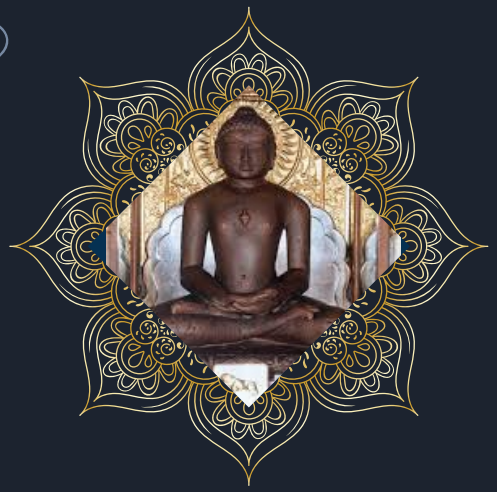


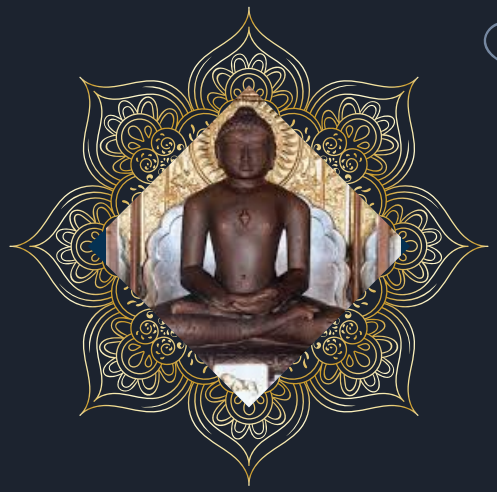
(वीरछन्द)

इसी दिवस गौतम स्वामी को, सन्ध्या केवलज्ञान हुआ।
केवलज्ञान लक्ष्मी पाई, पद सर्वज्ञ महान हुआ।।
देवों ने अति हर्षित होकर, रत्न-ज्योति का किया प्रकाश।
हुई दीपमाला द्विगुणित, आनन्द हुआ छाया उल्लास।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला



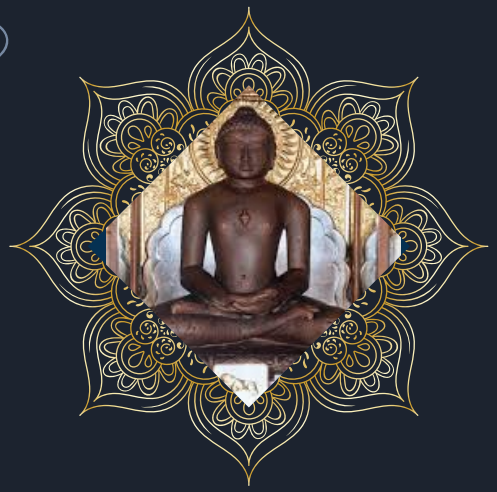


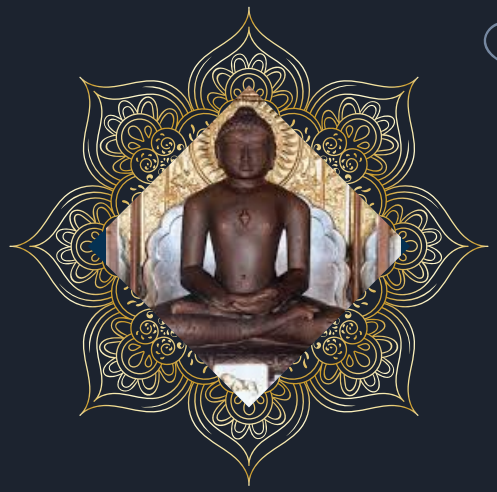
(वीरछन्द)

प्रभु के चरणाम्बुज दर्शन कर, हो जाता मन अति पावन।
परम पूज्य निर्वाणभूमि शुभ, पावापुर है मन-भावन॥
अखिल जगत में दीपावली, त्यौहार मनाया जाता है।
महावीर निर्वाण महोत्सव, धूम मचाता आता है॥

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला



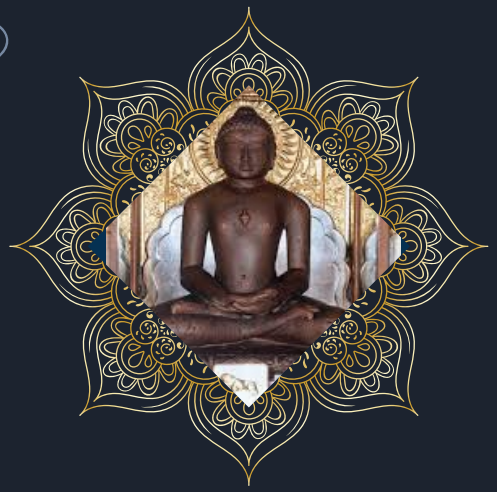


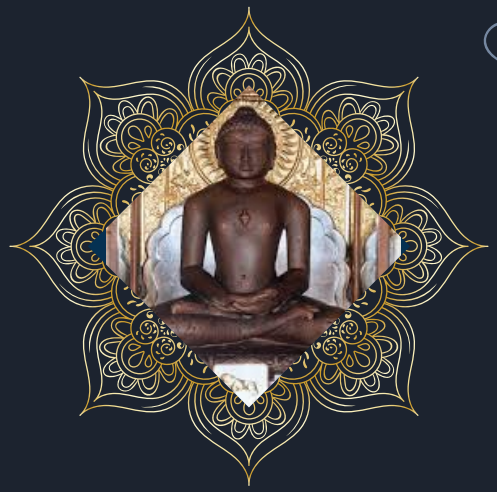
(वीरछन्द)

हे प्रभु! महावीर जिन स्वामी, गुण अनन्त के हो धामी।
भरतक्षेत्र के अन्तिम तीर्थंकर, जिनराज विश्वनामी।।
मेरी केवल एक विनय है, मोक्ष-लक्ष्मी मुझे मिले।
भौतिक लक्ष्मी के चक्कर में, मेरी श्रद्धा नहीं हिले।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला



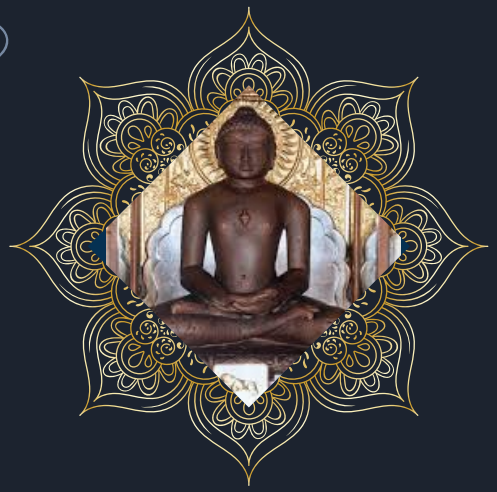


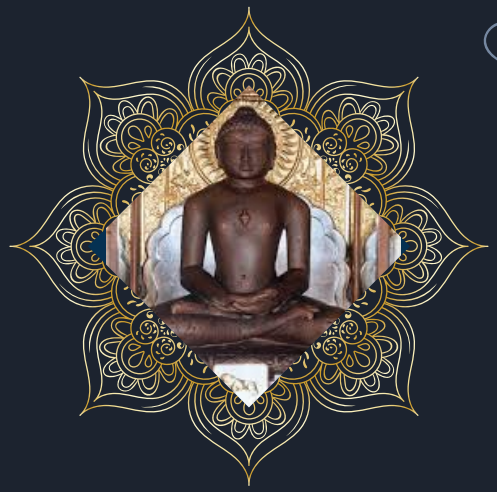
(वीरछन्द)

भव-भव जन्म-मरण के चक्कर, मैंने पाये हैं इतने।
जितने रजकण इस भूतल पर, पाये हैं प्रभु दुख उतने।।
अवसर आज अपूर्व मिला है, शरण आपकी पाई है।
भेदज्ञान की बात सुनी है, तो निज की सुधि आई है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला





(वीरछन्द)

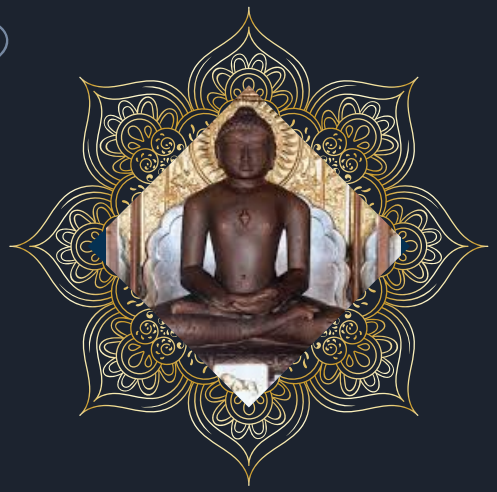
अब मैं कहीं नहीं जाऊँगा, जब तक मोक्ष नहीं पाऊँ।
दो आशीर्वाद हे स्वामी! नित्य नये मंगल गाऊँ।।

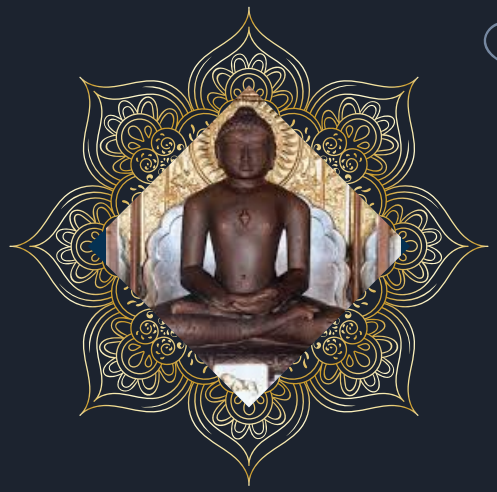
11

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला





(दोहा)

दीपमालिका पर्व पर, महावीर उर धार।
भावसहित जो पूजते, पाते सौख्य अपार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु